क्या भविष्य बेहतर होगा?

2020 [illegible]

दुनिया भर में लोग टेक्नोलॉजी के बारे में बात कर रहे हैं, भविष्य को पकड़ने की चाहत में, लेकिन मैं तो प्रकृति और खेतों की ओर लौटना चाहता हूँ।

इंसान पूरी ताकत से आगे बढ़ रहा है, लेकिन अगर दुनिया दस साल पहले की ही रुकी रहती, तो भी कोई बुराई नहीं होती।

लोग अंतहीन धन की तलाश में हैं, पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों को पैसे में बदल रहे हैं, और अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए सिर्फ पैसा और कचरा भरा एक ग्रह छोड़ रहे हैं।

पूंजीवाद, एक हिस्से को मेहनत करने के लिए मजबूर करता है, जबकि दूसरे हिस्से को बेरोजगारी में धकेल देता है।

पिछले कुछ सौ सालों में इतनी सारी उच्च तकनीक और बुद्धिमान लोग सामने आए हैं, फिर भी हमारा जीवन पहले से कहीं ज्यादा मुश्किल होता जा रहा है।

हम जो सच्चाई और सुंदरता समझते हैं, आखिरकार पता चलता है कि वह सिर्फ एक के बाद एक झूठ और धोखा है।

“जब मामला हमारे साथ नहीं होता, तो हम उसे अनदेखा कर देते हैं, लेकिन अंत में पता चलता है कि हम कहीं भाग नहीं सकते, हम एक-एक करके बुलबुलों में फंस जाते हैं।”

हमने तरह-तरह के दोस्त बनाए, और आखिरकार पाया कि वे भी हमारे जैसे ही हैं।

हमने कभी खुद को इतना महान समझा था, लेकिन आखिरकार पाया कि हम सभी साधारण इंसान हैं।

हम कभी दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं, इस बात पर इतना अधिक ध्यान देते थे, लेकिन अंत में पता चला कि कोई वास्तव में परवाह नहीं करता।

हमें लगा कि वास्तव में किसी को परवाह नहीं है, लेकिन दोस्तों की देखभाल ने हमें गर्मजोशी से भर दिया।

हमारे दैनिक जीवन में उन छोटी-छोटी चीज़ों को जिन्हें हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं, प्रकृति के रहस्य छिपे होते हैं।

हम जितना अधिक कुछ पाने की कोशिश करते हैं, उतना ही अक्सर परिणाम हमारी इच्छा के विपरीत होता है।

जितना हम सरलता से कुछ करते हैं, बिना किसी और उद्देश्य के, उतना ही हमें वह मिलता है जो हम चाहते थे।

जितनी जल्दी हम प्यार करने और शादी करने की कोशिश करते हैं, उतना ही कम हमारे बीच प्यार का जुड़ाव हो पाता है।

हम सोचते हैं कि अगर हम किसी और के साथ हो जाएं तो सब ठीक हो जाएगा, लेकिन फिर भी हम एक-दूसरे से लड़ते और प्यार करते रहते हैं।

जितना हम बिना किसी सिद्धांत के पैसा कमाने की जल्दी में होते हैं, उतना ही हम वास्तविकता से हार जाते हैं।

हम पैसे कमाने का सबसे अच्छा तरीका ढूंढने के लिए बहुत मेहनत करते हैं, लेकिन अंत में हमें पता चलता है कि पैसे बचाना ही सबसे आसान तरीका है।

जो लोग सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते, वे अक्सर लोगों की नज़र में सफल हो जाते हैं।

जो लोग भौतिक रूप से सादगी और गरीबी में जीवन व्यतीत करते हैं, वे अक्सर अधिक दयालु और निस्वार्थ होते हैं।

हम जीवन के अर्थ की खोज में लगे रहते हैं, लेकिन अंत में पाते हैं कि कोई अर्थ ही नहीं है।

लोग सोचते हैं कि मैं गरीब और बदहाल हूँ, लेकिन असल में मैं सिर्फ अपनी अंतरात्मा के खिलाफ जाकर अधिकतम मुनाफा कमाने से इनकार कर रहा हूँ।

हम सोचते हैं कि सूअर, गाय, भेड़ और घोड़े मूर्ख और दयनीय हैं, लेकिन हमारा जीवन अक्सर उनसे भी बदतर होता है।

हमें लगता है कि जीवन हमें बंधनों से जकड़े हुए है, लेकिन हम यह नहीं समझते कि ये बंधन हमारे मन में हैं।

हम सोचते हैं कि जेल में बंद लोग पतित और दुखी होते हैं, लेकिन हमें यह नहीं पता कि वे बाहर के लोगों से ज़्यादा समझदारी से जी रहे होते हैं।

हम जिस चीज़ का सपना देखते हैं, आखिरकार पाते हैं कि वह बस इतनी ही है।

हम जिन प्राधिकरणों और प्रतिभाओं की पूजा करते हैं, आखिरकार पता चलता है कि वे हमसे ज़्यादा खास नहीं हैं।

हम पहाड़ों और नदियों को पार करते हैं, और अंत में पाते हैं कि सत्य हमारे सामने ही है, बस यह देखने की हिम्मत है कि हम इसे देख सकते हैं या नहीं।

हम सोचते हैं कि हम पूरी दुनिया को समझ चुके हैं, लेकिन फिर पाते हैं कि हम एक बूंद की तरह छोटे हैं और केवल सतही ज्ञान रखते हैं।

जीवन में ज्यादातर समय कोई हमें यह करने या वह करने के लिए मजबूर नहीं करता, बल्कि हम खुद ही ढेर सारे काम और परेशानियां ढूंढ लेते हैं।

दूसरे कहते हैं कि हम सक्रिय, उत्साही और मेहनती हैं, लेकिन वास्तव में यह सिर्फ हमारे मन में भरे डर और चिंता का परिणाम है।

हम अपने आप को साबित करने के लिए एक-एक उपलब्धि हासिल करते हैं, लेकिन फिर भी अपने मन के अंदर की कमी को पूरा नहीं कर पाते।

हम सबसे चतुर बनने की इच्छा रखते हैं, लेकिन अंत में पता चलता है कि हमारे पास केवल साहस, ईमानदारी और शुद्धता की कमी है।

हम शोर और उत्सव की तलाश करते हैं, लेकिन अंत में पाते हैं कि वह सिर्फ एक समूह की अकेलापन है।

हम जिन्हें प्रतिभाशाली समझते हैं, अंत में हमें पता चलता है कि वे भी उसी तरह के उत्साह या दुःख से भरे जीवन से गुज़रे हैं।

हम जितने बड़े होते जाते हैं, उतना ही बचपन में वापस जाने की इच्छा होती है, बिना किसी चिंता और सरल खुशियों के।

लोग सोचते हैं कि सम्राट का जीवन बहुत सुखद और आनंदमय होता है, लेकिन वे यह नहीं जानते कि उन पर भारी औपचारिकताओं का बोझ होता है, मंत्रियों को संभालना मुश्किल होता है, और वे शायद ही कभी महल से बाहर निकल पाते हैं। उनका लगभग पूरा जीवन महल की दीवारों के भीतर ही बीत जाता है।

हम जितना निराशावादी रूप से दुनिया को देखते हैं, अंत में उतना ही वास्तविक आनंद पाते हैं।

जितना अलग और विपरीत दिशा में चलेंगे, उतना ही इस दुनिया को स्वीकार करेंगे और प्यार करेंगे।

हम सोचते हैं कि समाज और जीवन ऐसे ही होते हैं, लेकिन जब हम किसी दूसरे देश में जाते हैं, तो पाते हैं कि वहाँ लोग और उनका जीवन ऐसे भी हो सकते हैं।

हम जिन राष्ट्रीय मामलों, सामाजिक मुद्दों और सेलिब्रिटीज़ को महत्वपूर्ण समझते हैं, वे दूसरे देशों के लोगों के लिए पूरी तरह से अनजान हो सकते हैं।

हम सोचते हैं कि यह करना ही होगा, यह होना ही चाहिए, लेकिन अंत में पता चलता है कि यह सिर्फ एक जिद्द भर थी।

हम सोचते हैं कि जीने का तरीका बदलने से सब ठीक हो जाएगा, घोड़ों को चारा देना, लकड़ी काटना, दुनिया घूमना, लेकिन अंत में पाते हैं कि अकेलापन और खालीपन फिर भी हमारे साथ-साथ चलते हैं।

सब कुछ इतिहास की लंबी नदी में विलीन हो जाएगा, और इसके बाद हमें मानवता की देखभाल करनी चाहिए, पर्यावरण का ध्यान रखना चाहिए, मितव्ययी और सरल जीवन जीना चाहिए, और अपनी आत्मा को समृद्ध बनाना चाहिए।

विस्तारित पठन:

- यिन वांग का ब्लॉग
- जॉन जंदाई - जीवन इतना सरल है, फिर हम इसे इतना कठिन क्यों बना रहे हैं